द्वितीय अध्याय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1 प्रस्तावनाः–

मानव को सतत् प्रयासो से भूतकाल में एकत्रित ज्ञान अनुसंधान में मिलता है। अनुसंधान द्वारा प्रस्तावित अध्ययन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में संबंधित समस्याओं पर पहले किये गये कार्य से बिना जोड़े स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नहीं हो सकता। अनुसंधान की योजना में संबंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषो, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधो एवं अभिलेखो आदि से हैं, जिसके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण शोध के उद्देश्यों की प्राप्ति अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

साहित्य का पुनरावलोकन प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महव्वपूर्ण कदम है। साहित्य पुनरावलोकन एवे कटिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो, साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्यायों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकारणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है। समस्या से संबंधित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है जिससे किसी कार्य की पुनरावृत्ति नहीं हो सकती।

2.2 संबंधित साहित्य के अध्ययन का महत्वः–

वस्तुतः संबंधित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधार्थी अंधे तीर के समान होता है। इसके अभाव में उचित दिशा में वह एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक उसे ज्ञात न हो कि उस क्षेत्र में कितना कार्य किया गया है।

तथा उसके निष्कर्ष क्या आये हैं। तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न उसकी रूपरेखा तैयार कर कार्य को सम्पन्न कर सकता है।

अतः इसके महत्व को स्पष्ट करने हेतु निम्न परिभाषा दी है

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आवश्यकता खोजो से परिभाषित होता है। उसी प्रकार शिक्षा में जिज्ञासु छात्र/छात्राऐं अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधान के लिए भी उस क्षेत्र से संबंधित सूचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है" –'गुड बार एवं स्केट्स,

2.3 संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

1. राव.आर.एस. और भारती एम. 1989

समस्या– केन्द्रीय विद्यालायों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकनों का अध्ययन

उद्देश्यः–

1. विभिन्न विषयों एवं विभिन्न विद्यालयों में प्रस्तुति एवं अनिश्चितता के स्तर के बीच में सह संबंध ज्ञात करना।
2. वार्षिक परीक्षा में सतत् मूल्यांकन पद्धति के प्रभावो का अध्ययन करना।
3. अनिश्चितता के संदर्भ में माता पिता के गुणो एवं वार्षिक अंक प्राप्ति के मध्य सह संबंध ज्ञात करना।

निष्कर्षः–

1. माता की शिक्षा का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पर प्रभाव पाया गया।
2. माता एवं पिता की आयु का विद्यार्थियों के वार्षिक अंको पर प्रभाव देखा गया।
3. माता–पिता की आयु भी इस तंत्र को प्रभावशाली बनाने में सहायक है।

2. अर्चना भट्टाचार्या एवं निर्मला शर्मा (1998)

समस्या– प्राथमिक शालेय स्तर पर बच्चों के सर्वांगिण विकास हेतु शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्रियाओं का समान महत्त्व

इन्होनें "प्राथमिक शालेय स्तर पर बच्चों के सर्वांगिण विकास हेतु शैक्षिक एवं सह शैक्षिक क्रियाओं का समान महात्त्व" विषय नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। यह अध्ययन असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक शालाओं के तीन खण्डो में 50 प्राथमिक विद्यालयों पर किया गया।

उद्देश्यः–

1. प्राथमिक विद्यालय द्वारा चलाये जा रहे पाठ्यक्रम के क्षेत्र में यह शैक्षिक मूल्यमापन को जाँचना।
2. असम के जोरहाट जिले के प्राथमिक विद्यालयों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के स्थिति का अध्ययन करना।
3. अध्यापको की सी.सी.ई. के प्रति जागरूकता को जानना।

निष्कर्षः–

1. विद्यालय में सहशैक्षिक क्रिया को करने हेतु कोई व्यवस्था (जगह) नहीं हैं
2. यह शैक्षिक गतिविधियों में कौशल उपयोगिता का निर्धारण करने हेतु मूल्यमापन प्रक्रिया का कोई प्रारूप नहीं है। सी.सी.ई. के अनुसार विद्यालयीन दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है।
3. अध्यापको की अनुपस्थिति पायी गई।
4. केवल सैद्धांतिक रूप में अध्यापको को इसके बारे में पता है।

5. यह निगरानी हेतु परिवेक्षण प्रतिक्रिया के लिए राज्य प्राथमिक अधिकारी से कोई दिशा निर्देश नहीं दिये जाते।

6. इस व्यक्ति का प्रमुख कारण यह है कि औपचारिक प्रशिक्षण संबंध में स्कूल के पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में इन गतिविधयों को शामिल किया गया है।

7. शैक्षिक गतिविधियों के महत्व के अलावा सहशैक्षिक गतिविधियों को महत्व दिया जाना चाहिए।

3. डॉ. पी. मंजूला राव 2001

समस्याः– सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रभावशीलता का पदभार शिक्षको के मूल्यांकन।

इन्होनें "प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों पर सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण कार्यक्रम का मूल्यांकन प्रयोग पर प्रभाव" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया।

उद्देश्यः–

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण पहले अध्यापकों का मूल्यमापन अनुप्रयोग का अध्ययन करना।

2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण पश्चात अध्यापकों का मूल्यमापन प्रयोग में प्रश्नोत्तरी कौशल परीक्षण और रिपोर्टिंग कार्यपद्धति का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण पहले पुराने ढंग से रटने रटाने पद्धति पर अधिक बल देते थे। परीक्षा तक मूल्यमापन को मर्यादित करते थे।

2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रशिक्षण पश्चात मूल्यमापन कौशल में सुधार हुआ इससे छात्रों की उपलब्धि बढ़ने में मदद मिली है।

3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांक प्रशिक्षण उपरांत अध्यापको के प्रश्नोत्तरी कौशल का विकास हुआ। वे रचानत्मक पद्धित से मूल्यमापन करते है। मूल्यमापन में परीक्षण, मौखिक, लिखित दोनो का समावेश किया जाता है। साथ ही रिकॉर्ड और रिर्पोटिंग समय पर पूर्ण करने से छात्रो के सर्वांगिण गुणो का विकास करने में इस की सहायता मिल गई है। छात्रों की उपलब्धि बनाने में मदद मिल रही है।

4. **LAXMINARAYAN U. RIE BHOPAL 2005**

Conducted study o continuous assessment scheme to develop personal & social qualities.

This study on emphasis the progress of the learner will be evaluated quite often in continuous evaluation in order to acquaint the teacher with the scheme, orientations, programme ere organized.

The major finding of this study it is fount that there is improvement in qualities like regular habits, cleanliness, protecting environment, physical emotional development, self expression protections of public property and appreciation of cultural heritage.

Positions Paper, NCF

Position paper, NCF 2005, Examination refoems; continuous and comprehensive **Evaluations (CCE) :**

The group felt strongly that a school based continuous & comprehensive evaluation system to be established in order to :

1. Reduce stress on children.
2. Make evaluation comprehensive and regular CCE need for introducing CCE in schools in an effective and systematic manner has been felt for a long time as the examination, conducted by the boards of school

education. The govt. has taken initiatives for the periodic assessment in scholastic area and co-scholastic area.

CCE refers to a system of school based evaluation of student that refers to a system of school based evaluation of student that cover all aspects of students.

5.ROUTE RANJAN KUMAR, GURU, NIBEDITA 2010

"The Scenario of continuous & comprehensive Evaluation in 21st century " October 10 Education tracks.

In this article, he averring that we are an able to practice. Continuous is comprehensive. Evaluation in our classroom through it contributes a lot to the teaching learning process the author state that we should try our best to implement continuous & comprehensive evaluation whole heartedly with missionary Zeal.

6. Continuous and Comprehensive Evaluation - 2012

Statement of Problem- **A Study of Teacher's perception in Continuous and Comprehensive Evaluation - 2012**

By Pooja Singhal

(Research Scholar Department of Educational Studies, Jamia Millia Eslamia, Delhi)

School is an institution where talents are nurtured. Therefore it becomes very important to continuously revise and introduce such measures and schemes which will impact the mind, character and physical ability of the learner. Indian Education is moving form summative to a continuous evaluation system. This study is an attempt to find out teacher's perceptions about the scheme of CCE, the problems they face while its execution and the

suggestions that teacher's want to give in making CCE effective and truthful on ground realities.

Objectives:-

This study was taken up with the following objectives in mind:

1. To study the government school teacher's perception of CCE.
2. To study the difference in the perception of male and female government school teacher's towards CCE.
3. To study the government school teacher's perception of CCE at primary and secondary level.
4. To study the teacher's perception of CCE with varying educational qualifications.
5. To study the teacher's perception of CCE with regard to number of years spent in teaching.
6. To make suggestions for facilitating smooth execution of CCE in schools.

Findings:- The result of the study revealed that currently the perception of government school teacher's is average which indicated moderate acceptability of CCE by the teacher's. The teacher's are not adequately prepared for the effective execution of CCE in government schools. Further the study revealed that the large number of students in the classes, lack of appropriate training, inadequate infrastructure and teaching material and increased volume of work act as barriers in smooth execution of CCE.

7. **Continuous and Comprehensive Evaluation By Rao (2006) conducted a study on:- "Impact of Training in CCE on the**

Evaluation practices of Teachers of primary School in Tamil Nadu"-

This study deals with the role of CCE which is considered as very important when our aim is to improve learner's quality not only in the school subjects but also in their personal and social aspects. The continuous assessment in the content of school is considered as a continuous updating of teacher's judgments about their performance is to be made,

In this study, and attempt was made to train the primary school Teacher's in CCE and to research upon its effectiveness. the main aim of this study wad to study the impact of training programme on CCE over the evaluation practices of primary school Teacher's.